आंवला के बगीचे में लगने वाले प्रमुख रोग एवं उनका नियंत्रण

कृषि कुंभ (सितंबर, 2023),
खण्ड 03 भाग 04, पृष्ठ संख्या 01–03

आंवला के बगीचे में लगने वाले प्रमुख रोग एवं उनका नियंत्रण

रवि कुमार रजक[1], डॉ. पंकज कुमार[2] एवं ओम नारायण[4]

[1]शोध छात्र एवं [2]सहा. प्राध्यापक कीट विज्ञान विभाग

[4]शोध छात्र, फल विज्ञान विभाग

आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविघालय कुमारगंज, अयोध्या, उतर प्रदेश, भारत।

Email Id: ravikumarrajak0106@gmail.com

परिचय–

आँवला में लगने वाले प्रमुख रोग टहनी झुलसा, पत्ती धब्बा रोग, रतुआ, सूटी मोल्ड, लाइकेन, ब्लू मोल्ड, श्यामवर्ण, गीली सड़न, काली गीली सड़न, फोमा फल सड़न रोग, निग्रोस्पोरा फल सड़न रोग, पेस्टालोसिआ फल सड़न रोग व इंटरनल नेक्रोसिस हैं। जिसके रोकथाम क उपाय संक्षेप में इस लेख में उलेखित हैं।

आँवले का टहनी झुलसा रोग–

यह आंवले का टहनी झुलसा रोग का संक्रमण बरसात के मौसम के दौरान आंवला पर दिखाई देता हैं। और यह डिप्लोडिआ थिओब्रोमईडी के कारण फैलता है। टहनियों का झुलसना और उप्पर से निचे की तरफ तने का सुखना इस रोग के मुख्य लक्षण हैं। अक्सर नर्सरी में इस रोग का 50 प्रतिशत संक्रमण देखा गया हैं।

रोग नियंत्रण के उपाय– नर्सरी में फसल को छायांकन से बचायें। कार्बेन्डाजिम (0. 1 प्रतिशत) या मैन्कोजेब या जिनेब/0.25 प्रतिशत के निरंतर छिड़काव के साथ बगीचे में साफ–सफाई का ध्यान रखें।

आँवले का पत्ती धब्बा रोग–

यह रोग कोलेटोट्रिईकम डेमाटीसियम के कारण आंवले में फैलता है। और इसका शुरआती लक्षण पत्तो पर बरसात के दिनों में पानीनुमा धब्बों के रूप दिखाई देते हैं। और यह विक्षत् सामान्यतः 2–3 से० मी० व्यास के होते हैं तथा पत्तो के सिरो से जले हुई दिखाए देते हैं। और बाद में, धब्बे पत्ती की सतह पर संरचनाओं की तरह बिंदी के रूप में दिखाई देते हैं।

नियंत्रण के उपाय– कैप्टॉन (0.2 प्रतिशत) या फिर कार्बेन्डाजिम (0.1 प्रतिशत) का छिड़काव बीमारी को नियंत्रित करने के लिए लाभप्रद मन गया हैं।

आँवले का रतुआ–

यह रोग रवेनेलिआ एम्ब्लिकै के कारण आंवला में फैलता है।इस रोग में पत्तियों, पुष्प शाखाओं तथा तने पर रतुआ रोग से नारंगी रंग के फफोले दिखाई देते हैं।

नियंत्रण के उपाय– जुलाई–सितंबर के दौरान डाईथेन–जेड 78 (0.2 प्रतिशत) की वेटएबल सल्फर (0.4 प्रतिशत) के तीन छिड़काव इस रोग को रोकने के लिए आवश्यक हैं। इस रोग की रोकथाम के लिए मैंकोजेब (0.25 प्रतिशत), का छिड़काव भी प्रभावी होता हैं।

आँवले का सूटी मोल्ड–

सूटी मोल्ड पत्ते, टहनियाँ और फूल की सतह पर काली कवक विकास की मखमली कवरिंग बनाता हैं। और ये केवल सतह तक ही सीमित हैं और पत्तियों में नहीं घुसता हैं। अक्सर रस चूसने वाले कीट इस रोग को फैलाते हैं जैसे तिला, सफेद मक्खी आदि। उनके दवारा छोड़े जाने से यह कवक आसानी से आकर्षित होकर ऊपरी परत पर फैलने लगती हैं और ग्रसित सतह काले रंग में परिवर्तित हो जाती हैं।

रोग नियंत्रण के उपाय–

- ❖ सबसे पहले रस चुषक कीटों के लिए नीमास्त्र या फिर अग्निआस्त्र का प्रयोग करें।
- ❖ स्टार्च/2 प्रतिशत का छिड़काव या लैम्ब्डा सायहलोथ्रिन 0.05 प्रतिशत का छिड़काव इस रोग को रोकने में मददगार हैं और संक्रमण अधिक हैं, तो स्टार्च में वेटएबल सल्फर/0.2 प्रतिशत मिला के छिडकाव करें।

आँवले का लाइकेन–

लाइकेन बड़े हो गए पेड़ के तने की सतह पर पाए जाते हैं। यह पेड़ के मुख्य तने और शाखाओं पर अलग अलग आकार के सफेद, गुलाबी, सतही पैच के रूप में देखें जाता हैं। और इसका मुख्य कारण सट्रीगुला एलिगेंस है।

रोग नियंत्रण के उपाय– जूट की बोरी के साथ रगड़ना और कास्टिक सोडा (1 प्रतिशत) के प्रयोग द्वारा स्तंभ और शाखाओं पर चिपके लाइकेन को छिड़काव द्वारा नियंत्रण किया जा सकता हैं।

आँवले का ब्लू मोल्ड–

यह फल की सतह पर भूरे रंग के धब्बे बनता हैं। और इस रोग की प्रगति पर फल का रंग बैंगनी–भूरे, पीले और अंत में नीले रंग का हो जाता हैं। और इसके संक्रमित फल की सतह पर पीले रंग के तरल सी दिखने वाली बूंदों का रिसाव होता हैं।

नियंत्रण के उपाय– फलों को सावधानी से भंडारण करें। संचयन और भंडारण के दौरान फलों की सतह पर किसी भी प्रकार की चोट से ब्लू मोल्ड का खतरा बढ़ जाता हैं। और भंडारण में स्वच्छता की स्थिति को बनाए रखा जाना चाहिए। बोरेक्स या सोडियम क्लोराइड (1 प्रतिशत) के साथ फल का उपचार नीले मोल्ड संक्रमण की जांच करता हैं।

आँवले का श्यामवर्ण–

इस रोग के लक्षण हरे अधपके फलों पर जलयुक्त दबे हुए धब्बों के रूप में शुरू होते हैं। और बाद में धब्बों के बीच का भाग काला हो जाता हैं। इन धब्बों के नीचे का गूदा मुलायम, बाद में पूरा फल ही सवंमित हो जाता हैं। और छोटे अनियमित आकार के जलासिक्त धब्बे पत्तियों पर भी देखे जा सकते हैं। जो बाद में भूरे रंग के हो जाते हैं। और यह रोग कोलेटोट्रिईकम ग्लोस्पोरिओइड्स के कारण से फैलता है।

रोग नियंत्रण के उपाय– बाग की स्वच्छता का ध्यान रखें। और संक्रमित फलों को नष्ट कर दे। और और फलों को भण्डारण करने से पहले कार्बनडाजिम (0.1 प्रतिशत) का छिड़काव करें।

आँवले का गीली सड़न–

यह रोग सामान्य रूप से नवंम्बर और दिसंबर में दिखाई देता हैं। और फल का आकार भी विकृत हो जाता है। और फलों

में भूरे एवं काले रंग के धब्बे सक्रमण के 2–3 दिनों में पैदा हो जाते हैं। और संक्रमित फल गहरे भूरे रंग के हो जाते हैं। कवक दोनों अपरिपक्व और परिपक्व फलों में संक्रमण का कारण बनता हैं, लेकिन परिपक्व फल अधिक अतिसंवेदनशील होते हैं।

नियंत्रण के उपाय– फलों को चोट से बचाये। और नवंम्बर माह के दौरान डाइथेन एम –45 या बाविस्टिन (0.1 प्रतिशत) के साथ फल का उपचार करें।

आँवले का काले गीली सड़न–

काली गीली सड़न तोड़े हुए और संग्रहित फलों में दिखाई देती हैं। और इन फलों के ऊपर सफेद रंग की कवक की परत दिखाई देती हैं। और सड़े हुए फलों के उप्पर काले रंग को बीजाणु की परत चूर्ण की तरह दिखाई देती हैं और पहले से चोटिल फलों में संकमण की ज्यादा संभावना होती हैं।

रोग नियंत्रण के उपाय– तुड़ाई के दौरान, फलों को चोट से बचाये। संक्रमित फलों को नष्ट करे। और फसल तुड़ान से पहले डाइथेन एम –45 (0.2 प्रतिशत) या कार्बनडाजिम (0.1 प्रतिशत) का छिड़काव करें।

आँवले का फोमा फल सड़न रोग–

सड़न छोटे गुलाबी भूरे धब्बों से शुरू होती हैं तथा फलों पर बाद में आँख के आकर का बड़ा धब्बा बनाती हैं। और धब्बों के नीचे की फल की कोशिकाएं सड़ना शुरू हो गई होती हैं। और फल पूरी तरह से 15 दिनों के भीतर सड़ जाते हैं।

रोग नियंत्रण के उपाय– फलों को चोट से बचाये खास कर तुड़ाई के समय तथा ग्रसित फलों को नष्ट करें। और फसल तुड़ान से पहले डाइथेन एम–45 (0.2 प्रतिशत) या कार्बनडाजिम (0.1 प्रतिशत) का छिड़काव करें।

आँवले का निग्रोस्पोरा फल सड़न रोग–

हलके भूरे रंग की कवक को फलों के उप्पर देखा जा सकता हैं। और यह कवक भूरे रंग के परिगलित घाव फलों के ऊपर पैदा करती हैं। यह निग्रोस्पोरा सफैरिका के कारण फैलता है।

रोग नियंत्रण के उपाय– तुड़ाई के दौरान, फलों को चोट से बचाना अनिवार्य हैं अन्यथा इसमें सड़न जल्द उत्पन हो जाती हैं एवं संक्रमित फलों को नष्ट करे। फसल तुड़ान से पूर्व फफुंदनाशको जैसे डाइथेन एम–45 (0.2 प्रतिशत) या कार्बनडाजिम (0.1 प्रतिश्त) का छिड़काव करें। जिससे कि फल तुड़ाई के उपरांत रोग ज्यादा नहीं फैले।

आँवले का पेस्टालोसिआ फल सड़न रोग–

फलों के ऊपर अनिमित और भूरे रंग के धब्बे होना इस बीमारी के मुख्य लक्षण हैं। और समय के साथ ये धब्बे गहरे भूरे और काले रंग के हो जाते हैं। तथा फल का आंतरिक भाग भी सूखे हुए भूरे भाग में परिवर्तित हो जाता हैं। इसका मुख्य कारण पेस्टालोसिआ क्रुएन्ता है।

रोग नियंत्रण के उपाय– तुड़ाई के दौरान, फलों में चोट न लगे इस बात पर गौर करने की आवश्यकता हैं। और संक्रमित फलों को नष्ट करे तथा फसल पर कार्बेन्डाजिम (0.1 प्रतिशत) का छिड़काव तुड़ाई से पूर्व करना चाहिए। और फलों का संग्रहण साफ सुथरे पोत्रो में करना चाहिए। और भंडारण में स्वच्छता की स्थिति को बनाए रखा जाना चाहिए।